

उस दिन काम नहीं बन रहा था। बेहद बैचैनी थी। सृष्टि के विराट आकाश की तरह, रंग-आकाश की शक्तियाँ विचित्र हैं। इनपर हमारा काबू नहीं। सालों के श्रम के बाद ऐसा होना असह्य लगता था। कृष्ण सूर्य से निकले हुए रंग, खुद बाधाएँ डाल रहे थे। दो भागों में बँटा 'चित्र', विरोधी तत्वों के बीच, क्लेश में, धुन्धला सा, थका हुआ लगा, अपनी निजी शक्तियों को नियन्त्रित किये बिना, सफेद दीवार पर, असहाय। रुकना होगा, मैंने कहा, हम दोनों के लिये विराम आवश्यक है। इन परिस्थितियों में मुझे केवल 'कविता' से ही सकून मिलता है। जानकर, धीरे, बहुत धीरे, अपने लिये ही, करुणामय प्रार्थना के समान, 'मीर' के काव्य पढ़ने लगा :

"बे .खुदी ले गई कहाँ हमको
देर से इन्तजार है अपना।"

"खबर कुछ तो आई है उस बे.खबर तक"

"सिराने 'मीर' के आहिस्ता बोलो...

यकायक टेलिफोन की घन्टी बजी। एक शान्त और गंभीर आवाज़ थी, "मैं कविता लिखता हूँ। कुछ दिन ही हुए हैं, दिल्ली से आया हूँ। आपसे मिलना चाहता हूँ, चित्र देखना चाहता हूँ।"

मैंने .फौरन कहा, "चित्र तो बन ही नहीं रहा है आज। पर आइये ज़रूर, शायद कविता से सहारा मिलेगा। हाँ, पाँच बजे ठीक है।"

जवाब था, "छै बजे बहतर होगा। मैं दोपहर बच्चों को बा.ग में ले जा रहा हूँ। नहीं, मेरे नहीं, पड़ोस के..."

"आइये, मैं इन्तज़ार करूँगा", मैंने धैर्य से कहा।

बात खूबसूरत लगी। थके हुए दिन के ये पहले सुखद क्षण थे। तो आज भी दिल्ली में कविता लिखना संभव है, इस बुलन्द शहर में जहाँ 'मीर' और 'मजाज़' को चैन न मिला। आज भी क्या यह हो सकता है कि एक भारतीय पैरिस आकर बच्चों को बा.ग में सैर कराने के लिये समय निकाल सके। मैंने सोचा कि ऐसे शुद्ध और प्रारंभिक विचार तो एक कवि के मन में ही आ सकते हैं। अधिकतर दर्शक यहाँ आकर लूत्र, ओपेरा या नाइट क्लब में ही व्यस्त रहते हैं। बच्चों या फूलों के लिये यहाँ किसे समय है।

काला, बिगड़ा हुआ चित्र मुझे देख रहा था, मानों कह रहा हो : "संघर्ष छोड़ दिया।" नहीं, संघर्ष छोड़ना मैं नहीं जानता। बचपन से ही सुझाव, साधन, मार्ग मिले हैं : आग्रह, एकाग्र, भक्ति, कार्य-संकल्प और प्रार्थना। दमोह के स्नेहमय गीत आज भी याद हैं,

“ज्यों ज्यों डूबत श्याम में, त्यों त्यों उज्ज्वल होया।” हाँ, यही होगा, मुझे मालूम है, मैं उपस्थित हूँ, डूबना है, इन्हीं अव्याख्येय शक्तियों में, इन्हीं में जीवन है, इन्हीं में मोक्ष।

समय था प्रार्थना का। अनुभव मार्ग दिखाता है। एक मजदूर की तरह दैनिक कार्य से समझ मिलती है। चित्र जल्दी में नहीं बनते हैं। धैर्य और प्रतीक्षा आवश्यक हैं। अनुकूल क्षण, सहज, जन्मगत वातावरण, अन्तर्बोध केवल श्रवण से नहीं मिलते हैं। सृष्टि-विधि ही सर्वश्रेष्ठ है। रचनात्मक क्रियाओं में दिव्य, उत्कृष्ट और शक्ति शाली आन्तरिक प्रेरणाएँ सक्रिय हैं। इस विराट ब्रह्माण्ड में बुद्धि, तर्क-तुच्छ है। मेसा प्रत्यक्षता परम बोध है। कार्य आधार है। विचार शक्ति मानव जाति की विशेषता अवश्य है, हमारा वह मूल्य साधन है, पर हमें समझना है कि और भी शक्तियाँ सहायक हैं जिनका अभी हमें पूरा ज्ञान नहीं। जीवन में, या चित्र रचना में हम सोचना तो कभी बन्द नहीं करें, किन्तु यह प्रक्रिया तभी अधिक सफल लगती है, जब चित्र नहीं बनते हैं, या जब हम दूसरे चित्रकारों की कृतियाँ देखते हैं और समझना चाहते हैं।

सोचते सोचते, मैंने सोचा कि शब्दों का संसार तो और भी कठनाइयों से भरा होगा। कविता को हम न देख सकते हैं, न छू सकते हैं। फिर भी विचार शक्तियाँ शताब्दियों से कविता का सहारा ले रही हैं। ‘कवि’ मानविक कल्पनाओं का सम्राट है, शब्दों का स्वामी, मार्ग दर्शक, समृद्ध मनुष्य जिसने अस्तित्व को समझा है, और कुछ ही शब्दों में तात्त्विक अनुभवों और अहसासों को रूपायित किया है। देश में कविता का प्रेम तो हमें बचपन से ही मिला है, जीवित परम्परा की बहुमूल्य सम्पत्ति की तरह। और आज भी मेरे लिये परदेस में हिन्दी कविता पढ़ना या संगीत सुनना एक सुखद अनुभूति है।

क्या आज मैं पूछूँगा अतिथि कवि से, कुछ प्रश्न, उन समस्याओं के बारे में, जिनका मेरे पास जवाब नहीं, उन हिन्दी शब्दों का अर्थ, वे दोहे जिन्हें मैं भूल सा रहा हूँ, पर जिनकी गूँज अभी तक अविकल है। क्या वे खुद बताएँगे इस असफल चित्र को देखकर कि कविता लिखने में वही निराशा, वही पीड़ा, वही सुख है और उन्हीं खतरों का सामना करना पड़ता है। क्या मैं कहूँगा कि चित्रकार ‘गूँगा’ होता है, क्या वे जवाब देंगे कि कवि ‘अन्धा’ होता है, अन्तरज्योति के बावजूद। सालों सक्रिय होते हुए भी, मैं खुद नहीं समझ सका हूँ कि कैसे, किस जुनू में चित्र बनते हैं, चित्रकला क्या है। अगर एक ऐसा दिन आये और मुझे यह समझ मिल सके तो शायद मैं चित्र बना ही न सकूँगा। एक संगीतज्ञ की तरह मैं अपने उन चित्रों के बारे में जहाँ “चित्रता” संपूर्ण हो सकी है, केवल यही कहूँगा, “यह भगवान की कृपा है।” इलोरा की गुफाओं में एक शिल्पकार ने बड़ी ज्ञान शक्ति से लिखा है : “एतन्मया कृतमहि कृतमित्यस्मात्”

नहीं, बेहतर यही है, मैं कुछ नहीं पूछूँगा। कला के बारे में प्रश्न आक्रमण के समान लगते हैं। हमारे व्यक्तित्व, गुप्त और एकान्त क्षेत्रों में जहाँ हम खुद न पहुँच सकें, जिनकी अभी तक हमें खुद पहचान नहीं है, हम दर्शकों को किस तरह ले जा सकेंगे। हम किस तरह